



मधुमक्खी पालन से स्वरोजगार

निशांत घोडे*

॥ मधु में अत्यधिक ऊर्जा निहित होती है। प्रायः एक ग्राम मधु ग्रहण करने से 3.04 किलो कैलोरी ऊर्जा मिलती है और प्रति पौण्ड मधु की विशिष्ट ऊष्मा लगभग 0.6 किलो कैलोरी प्रति कि.ग्रा. प्रति डिग्री सेल्सियस होती है। ऊष्मा चालकता मधु के तापमान बढ़ने पर अधिक होती है। एक कि.ग्रा. मधु से लगभग 5500 कैलोरी ऊर्जा मिलती है। यदि एक कि.ग्रा. शहद की ऊर्जा मूल्य का दूसरे प्रकार के खाद्य पदार्थों के साथ तुलना करें, तो यह 65 अण्डे, 13 लीटर दूध, 8 कि.ग्रा. प्लम, 19 कि.ग्रा. हरी मटर, 12 कि.ग्रा. सेब व 20 कि.ग्रा. गाजर के बराबर हो सकता है। ॥

मधु में विभिन्न प्रकार के विटामिन 'ए', 'बी', 'सी', 'डी', 'ई' आदि पाये जाते हैं। इसमें विटामिन 'बी', थायमीन, राइबोफ्लविन, निकोटिनिक एसिड, पायरीडॉक्सिन, विटामिन 'सी' और पैन्थोथेनिक एसिड पाया जाता है। मधु में विटामिन 'सी' का अत्यधिक महत्व है। मधु की 100 ग्राम मात्रा में विटामिन 'बी' 0.004 मि.ग्रा., विटामिन 'बी₆' 0.008-0.32 मि.ग्रा. एवं पैन्थोथेनिक एसिड लगभग 0.02-0.11 मि.ग्रा. और विटामिन 'सी' लगभग 2.2-2.4 मि.ग्रा तक पाया जाता है। इसमें खनिज तत्व 0.02 से 1 प्रतिशत तक होता है।

*वानिकी और वन्यजीव विभाग, शहीद महेंद्रकर्मा विश्वविद्यालय, जगदलपुर, बस्तर (छत्तीसगढ़)

मौनालय की स्थापना

इसे रखने का स्थान मुख्य सड़क के पास न हो, साफ पानी का अच्छा स्रोत हो, वायुरोध और आशिक छायादार स्थान होना चाहिए। इसके अलावा मौनालय के तीन कि.मी. की त्रिज्या में वर्षभर मौनों को आहार उपलब्ध होता रहे।

समय

साधारणतः मधुमक्खी पालन कभी भी शुरू किया जा सकता है। अक्टूबर-नवंबर या फरवरी-मार्च में शुरू करने पर अधिक सफलता मिलती है। इस अवधि में मौसम अनुकूल होने से मधुमक्खियों को भोजन इकट्ठा करने में आसानी होती है तथा भोजन (पुष्परस एवं पराग) भी अधिक उपलब्ध होता है।

मौनवंशों की संख्या

मौन पालन की शुरुआत 3-5 मौनवंशों से ही करनी चाहिए, ताकि मधुमक्खी पालक को धीरे-धीरे इनके स्वभाव, आवश्यकता एवं प्रबंधन की व्यवहारिक जानकारी हो सके। नये मौन समुदाय को स्थापित करते समय प्रत्येक मौन पेटिका में 5 फ्रेम मौन खरीदने चाहिए, क्योंकि इनकी बिक्री फ्रेम पर ही होती है।

मौन परागण

मधुमक्खियां एक पुष्प से पराग व पुष्परस इकट्ठा करके दूसरे पुष्पों पर संग्रह करने जाती हैं। इसके फलस्वरूप परागण क्रिया सम्पन्न होने से फसल, सब्जी, फलोद्यान एवं औषधीय पौधे की उपज में सवा गुना से डेढ़ गुना बढ़ोतरी होती है। पर-परागण से उपज में औसतन 40 प्रतिशत तक की वृद्धि देखी गई है।

मौनपालक की वार्षिक व्यवस्था

मौसम परिवर्तन के साथ-साथ मौनवंशों की व्यवस्था बसंत एवं मधुस्राव काल में मौन अपना परिवार बढ़ाने में जुट जाती हैं। छत्तों में मधु एवं पराग का पूर्ण रूप से सेवन करके

मधुमक्खी आहार

वैसे तो मधुमक्खियां फूलने वाले पौधे एवं फसल में से लगभग 80 प्रतिशत तक अपना भोजन एकत्र करती हैं, लेकिन निम्नलिखित अधिक उपयोगी हैं:

फल-फसलें

लीची, अमरूद, सेब, आड़ू, करौंदा, कंजर, जामुन, बेर, तरबूज, खीरा, ककड़ी एवं बेल इत्यादि।

सब्जी फसलें

लौकी, तोरई, करेला, गाजर, मूली, सहजन, कद्दू इत्यादि।

तिलहन फसलें

सरसों, कसुम, तिल, सूरजमुखी इत्यादि।

चारा फसलें

बरसीम, बाजरा, मकई या जनेरा आदि।

मसालें

धनिया, प्याज, मेथी, सौंफ, मंगरैला आदि।

अपने कार्य की गति तीव्र कर देती हैं। ऐसी स्थिति में बक्सों में स्थान की कमी न होने दें तथा अतिरिक्त खाली छत्ते देते रहें और सुपर चढ़ा दें।

आवश्यक उपकरण

आधुनिक मौन पालन के लिए विभिन्न उपकरणों की आवश्यकता होती है, जिससे मौनों को पालने, एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने, निरीक्षण करने, मधु निकालने आदि में सहायता मिलती है। आधुनिक मौनगृह का निर्माण सर्वप्रथम एल. एल्लैगस्ट्रॉथ ने सन् 1851 में किया था, जिसका सिद्धान्त मौनान्तर था। मौन पेटिका की बनावट में प्रायः के साथ ऊपरी ढक्कन, आधार पट्ट, शिशु कक्ष से कुछ आगे से बड़ा भाग शामिल होता है। शिशु और मधु कक्षों में बीस चौखटें होती हैं, जिसमें उपयुक्त मौनान्तर होता है। इन चौखटों में मोमी छत्ताधार लगाकर पेटिका में लटकायी जाती हैं। इन सभी कमियों को देखते हुए कुछ आवश्यक उपकरणों का विकास किया गया है, जो निम्नलिखित हैं:

मौनपेटिका, छत्ताधर, रानीरोक पट, धुआंकार, दस्ताना, नकाब, नर फॉस, द्वाररक्षक, डम्मी बोर्ड, मधु निष्कासन यंत्र, वकछुठ थैला, भोजनपात्र, वाहन बक्सा, छीलन छुरी, इमबीडर, ब्रश, रानी कोष्ठ रक्षक, रानी पिंजड़ा, रानी रोक द्वार, आधार छत्ता बनाने की मशीन, बक्सा औजार, पोषक इत्यादि।

शत्रु एवं रोग से रोकथाम

बरसात के मौसम में शत्रु एवं रोग

आर्थिकी

दस मौनवंशों से मौनालय स्थापित करने पर 25,000-30,000 खर्च होता है। अतः एक इटालियन मौनवंश पर लगभग 2,500-3,000 रुपया खर्च होगा। एक इटालियन मौनवंश से 30-40 कि.ग्रा मधु प्रतिवर्ष उत्पादित होगा तथा तीन वंश की अतिरिक्त वृद्धि होगी। इस प्रकार 5-10 बक्सों से पालन शुरू करने से एक वर्ष में 16-20 हजार की शुद्ध आय प्राप्त हो सकती है। यह आय उसके मुख्य कार्य के अतिरिक्त की आय होगी। उनका रखरखाव पालक अपने मुख्य कार्य के साथ आसानी से कर सकता है। अतः मधुमक्खी पालन कम लागत में अधिक लाभकारी घरेलू उद्योग है जो पूर्णतः कृषि पर आधारित है।



सेहत का खजाना है शहद

का आक्रमण अधिक होता है। शत्रु में मोमी पतंगा, हड्डा, चींटी एवं माइट का आक्रमण अधिक होता है। मौनालय को बरसात में साफ-सुथरा रखना चाहिए एवं लगातार निरीक्षण करते रहना चाहिए। रोग की रोकथाम के लिए चार कि.ग्रा. चाशनी में एक कोबाडेम्स एवं टेरामाइसिन के कैप्सूल एक सप्ताह के अंतराल पर देने से बैक्टीरियल रोग का आक्रमण नहीं होता है। एकराईन रोग एवं माइट के नियंत्रण के लिए 20 दिनों के अंतराल पर सल्फर घोल या फार्मिक एसिड का प्रयोग करना चाहिए। मधुमक्खी पालन आर्थिक दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण है, जिसका वर्णन इस प्रकार है:

मधु

मधु पृथ्वी पर मिलने वाली सब वस्तुओं में अति श्रेष्ठ और अमृत माना गया है। यह एक पौष्टिक एवं लाभदायक आहार है। मधु उत्पादन द्वारा राष्ट्रीय सम्पदा में वृद्धि तो होती ही है। इसके साथ ही साथ देशवासियों को स्वास्थ्यप्रद आहार भी मिलता है।

मोम

मधुमक्खी से मिलने वाला दूसरा अत्यन्त आवश्यक व मूल्यवान पदार्थ मोम है। मोमबत्ती बनाने, जूता पॉलिश एवं सौन्दर्य प्रसाधन में इसका प्रयोग किया जाता है।

मधुमक्खियों द्वारा इनका उत्पादन अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिए किया जाता है। इसका उत्पादन व्यापक पैमाने पर भी किया जा सकता है।

पराग

पराग, मधुमक्खियों का प्रधान आहार है। इससे इनकी प्रोटीन की आवश्यकता पूरी होती है। यह नवजात शिशुओं से लेकर बड़ी मधुमक्खियां बनने तक सम्पूर्ण आहार का काम करता है। यह मानव जाति के लिए भी अत्यन्त लाभदायक है। वैज्ञानिकों ने खोज की है कि पराग व शहद का मिश्रण या अकेले पराग का इस्तेमाल करने से लंबी आयु होती है और जल्दी बुढ़ापा नहीं आता है।

कृषि उत्पादन में वृद्धि

परागण करके मधुमक्खियां फसलों की उपज बढ़ाती हैं। अच्छी किस्म के फल एवं बीज पैदा होते हैं। अनुमान लगाया गया है कि अगर शहद और मोम की प्राप्ति से एक रुपया मिलता है, तो परागण से 20 से अधिक रुपये का लाभ होता है। इतना ही नहीं परागण से मधुमक्खियां कई जंगली पौधे की प्रजातियों की भी अपना परिवार चलाने में मदद लेती हैं। इससे वातावरण को शुद्ध बनाये रखने में मदद मिलती है।